

تَحْسِبَنَّ اللَّهُ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۝١١٤

खयाल न करना कि **अल्लाह** अपने रसूलों से वा'दा ख़िलाफ़ करेगा¹¹⁴ बेशक **अल्लाह** ग़ालिब है बदला लेने वाला

يَوْمَ تَبْدَلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ

जिस दिन¹¹⁵ बदल दी जाएगी ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और आस्मान¹¹⁶ और लोग सब निकल खड़े होंगे¹¹⁷ एक **अल्लाह** के सामने

الْقَهَّارِ ۝١١٨ وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقْرَنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝١١٩

जो सब पर ग़ालिब है और उस दिन तुम मुजरिमों¹¹⁸ को देखोगे कि बेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे¹¹⁹

سَاءَ اٰيْلَهُمْ مِّنْ قَطْرٍ اِنٍ وَتَعْشَىٰ وُجُوهُهُمُ النَّارِ ۝١٢٠ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ

उन के कुरते राल के होंगे¹²⁰ और उन के चेहरे आग ढांप लेगी इस लिये कि **अल्लाह** हर जान को

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝١٢١ هَذَا بَدْعٌ لِلنَّاسِ وَ

उस की कमाई का बदला दे बेशक **अल्लाह** को हिसाब करते कुछ देर नहीं लगती यह¹²¹ लोगों को हुक्म पहुंचाना है और

لِيُنذِرُوا اٰبِهٖمْ وَلِيَعْلَمُوْا اَنَّهَا هُوَ اللّٰهُ وَاٰجِدُوْا لِيَدَّكُرْ اُولُوْا الْاَلْبَابِ ۝١٢٢

इस लिये कि वोह इस से डराए जाएं और इस लिये कि वोह जान लें कि वोह एक ही मा'बूद है¹²² और इस लिये कि अक़ल वाले नसीहत मांने

﴿ اٰيٰتِهَا ٩٩ ﴾ ﴿ ١٥ سُورَةُ الْحَجْرِ مَكِّيَّةٌ ٥٢ ﴾ ﴿ رُكُوْعَاتِهَا ٦ ﴾

सूरए हिज़्र मक्किय्या है, इस में निनानवे आयतें और छ⁶ रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला¹

الرَّٰفِ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِیْنٍ ۝١

येह आयतें हैं किताब और रोशन कुरआन की

114 : येह तो मुम्किन ही नहीं वोह ज़रूर वा'दा पूरा करेगा और अपने रसूल की नुसरत फ़रमाएगा, इन के दीन को ग़ालिब करेगा, इन के दुश्मनों को हलाक करेगा **115** : इस दिन से रोज़े कियामत मुराद है। **116** : ज़मीन व आस्मान की तब्दीली में मुफ़स्सरीन के दो क़ौल हैं : एक येह कि इन के औसाफ़ बदल दिये जाएंगे मसलन ज़मीन एक सत्ह हो जाएगी न इस पर पहाड़ बाक़ी रहेंगे न बुलन्द टीले न गहरे ग़ार न दरख़्त न इमारत न किसी बस्ती और इक्लीम का निशान और आस्मान पर कोई सितारा न रहेगा और आपताब, माहताब की रोशनियां मा'दूम होंगी, येह तब्दीली औसाफ़ की है ज़ात की नहीं। दूसरा क़ौल येह है कि आस्मान व ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी, इस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी, सफ़ेद व साफ़ जिस पर न कभी खून बहाया गया हो न गुनाह किया गया हो और आस्मान सोने का होगा। येह दो क़ौल अगर्चे ब जाहिर बाहम मुख़ालिफ़ मा'लूम होते हैं मगर इन में से हर एक सहीह है और वच्चे जम्अ येह है कि अब्वल तब्दीले सिफ़ात होगी और दूसरी मरतबा बा'दे हिसाब तब्दीले सानी होगी इस में ज़मीन व आस्मान की ज़ातें ही बदल जाएंगी। **117** : अपनी क़ब्रों से **118** : या'नी काफ़िरों **119** : अपने शयातीन के साथ बंधे हुए **120** : सियाह रंग बदबूदार जिन से आग के शो'ले और ज़ियादा तेज़ हो जाएं। (मारक़ वग़ज़ान)

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٢﴾ ذَرَّهُمْ يَأْكُلُوا وَيَمْتَعُوا

बहुत आरजूएं करेंगे काफिर² काश मुसलमान होते उन्हें छोड़ो³ कि खाएं और बरतें⁴

وَيُلْهِمُهُمُ الْأَمْلَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا

और उम्मीद⁵ उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं⁶ और जो बस्ती हम ने हलाक की उस का एक

كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ﴿٣﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجْلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٥﴾ وَ

जाना हुवा नविश्ता (लिखा हुवा फैसला) था⁷ कोई गुरौह अपने वा'दे से न आगे बड़े न पीछे हटे और

قَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ﴿٦﴾ لَوْ مَا تَأْتِينَا

बोले⁸ कि ऐ वोह जिन पर कुरआन उतरा बेशक तुम मजनून हो⁹ हमारे पास फिरिश्ते क्यूं

بِالْمَلَكَةِ إِن كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٥﴾ مَا نُنزِّلُ الْمَلَكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ

नहीं लाते¹⁰ अगर तुम सच्चे हो¹¹ हम फिरिश्ते बेकार नहीं उतारते

وَمَا كَانُوا إِذَا مُنْظَرِينَ ﴿٨﴾ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ

और वोह उतरें तो उन्हें मोहलत न मिले¹² बेशक हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक हम खुद

لَحْفَظُونَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِعَابِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾ وَمَا

इस के निगहबान हैं¹³ और बेशक हम ने तुम से पहले अगली उम्मतों में रसूल भेजे और

तपसिरे बैजावी में है कि उन के बदनों पर राल (एक खास गोंद) लेप दी जाएगी वोह मिस्ल कुरते के हो जाएगी उस की सोजिशा और उस के रंग की वहशत व बदबू से तकलीफ पाएंगे। 121 : कुरआन शरीफ 122 : या'नी इन आयात से **अल्लाह** तआला की तौहीद की दलीलें पाएं। 1 : सूरए हिज्र मक्किय्या है, इस में छ⁶ रूकूअ निनानवे आयतें, छ⁹ सो चव्वन कलिमे, दो हजार सात सो साठ हर्फ हैं। 2 : येह आरजूएं या वक्ते नज्अ अजाब देख कर होंगी जब काफिर को मा'लूम हो जाएगा कि वोह गुमराही में था या आखिरत में रोजे क्रियामत के शदाइद और अहवाल और अपना अन्जाम व मआल देख कर। जज्जाज का कौल है कि काफिर जब कभी अपने अहवाल, अजाब और मुसलमानों पर **अल्लाह** की रहमत देखेंगे हर मरतबा आरजूएं करेंगे कि 3 : ऐ मुस्तफा ! (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) 4 : दुन्या की लज्जतें 5 : तनअउम व तलज्जुज (ऐशो लज्जत) व तूले हयात की जिस के सबब वोह ईमान से महरूम हैं। 6 : अपना अन्जामे कार, इस में तम्बीह है कि लम्बी उम्मीदों में गिरिफ्तार होना और लज्जाते दुन्या की तलब में गर्फ हो जाना ईमानदार की शान नहीं। हज्जत अलिय्ये मुर्तजा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने फरमाया : लम्बी उम्मीदें आखिरत को भुलाती हैं और ख्वाहिशात का इत्तिबाअ हक से रोक्ता है। 7 : लौहे महफूज में इसी मुअय्यन वक्त पर वोह हलाक हुई। 8 : कुफ्फारे मक्का हज्जत नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से 9 : उन का येह कौल तमस्खुर और इस्तिहजा (या'नी मजाक) के तौर पर था जैसा कि फिरऔन ने हज्जते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ की निस्बत कहा था : "إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ"। 10 : जो तुम्हारे रसूल होने और कुरआन शरीफ के किताबे इलाही होने की गवाही दें 11 : **अल्लाह** तआला इस के जवाब में फरमाता है 12 : फिलहाल अजाब में गिरिफ्तार कर दिये जाएं। 13 : कि तहरीफ व तब्दील व जि्यादती व कमी से इस की हिफाजत फरमाते हैं, तमाम जिन्नो इन्स और सारी खल्क के मकदूर (बस) में नहीं है कि इस में एक हर्फ की कमी बेशी करे या तग्यीर व तब्दील कर सके और चूंकि **अल्लाह** तआला ने कुरआने करीम की हिफाजत का वा'दा फरमाया है इस लिये येह खुसूसियत सिर्फ कुरआन शरीफ ही की है दूसरी किसी किताब को येह बात मुयस्सर नहीं। येह हिफाजत कई तरह पर है एक येह कि कुरआने करीम को मो'जिजा बनाया कि बशर का कलाम इस में मिल ही न सके, एक येह कि इस को मुआरजे और मुकाबले से महफूज किया कि कोई इस की मिस्ल कलाम बनाने पर कादिर न हो, एक येह कि सारी खल्क को इस के नेस्तो

يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ كَذَلِكَ نَسُكُّهُ فِي

उन के पास कोई रसूल नहीं आता मगर उस से हंसी करते हैं¹⁴ ऐसे ही हम उस हंसी को उन

قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝

मुजरिमों¹⁵ के दिलों में राह देते हैं वोह इस पर¹⁶ ईमान नहीं लाते और अगलों की राह पड़ चुकी है¹⁷

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝ لَقَالُوا

और अगर हम उन के लिये आस्मान में कोई दरवाजा खोल दें कि दिन को उस में चढ़ते जब भी येही

إِنَّمَا سَكَّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ۝ وَلَقَدْ جَعَلْنَا

कहते कि हमारी निगाह बांध दी गई है बल्कि हम पर जादू हुआ¹⁸ और बेशक हम ने

فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّهَا لِلنَّاظِرِينَ ۝ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ

आस्मान में बुर्ज बनाए¹⁹ और उसे देखने वालों के लिये आरास्ता किया²⁰ और उसे हम ने हर शैतान

سَّاجِيمٍ ۝ إِلَّا مِنْ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شِهَابٌ مُبِينٌ ۝ وَ

मरदूद से महफूज रखा²¹ मगर जो चोरी छुपे सुनने जाए तो उस के पीछे पड़ता है रोशन शो'ला²² और

الْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَشْبَاتِهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ

हम ने ज़मीन फैलाई और इस में लंगर डाले²³ और इस में हर चीज़ अन्दाज़े

नाबूद और मा'दूम करने से आजिज़ कर दिया कि कुफ़्फ़ार बा वुजूद कमाले अ़दावत के इस किताबे मुकद्दस को मा'दूम करने से आजिज़ हैं ।

14 : इस आयत में बताया गया कि जिस तरह कुफ़्फ़ारे मक्का ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से जाहिलाना बातें कीं और बे अदबी से आप

को मजनुन कहा, कदीम ज़माने से कुफ़्फ़ार की अम्बिया के साथ येही आदत रही है और वोह रसूलों के साथ तमस्खुर करते रहे । इस में नबिय्ये

करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तस्कनीे खातिर (तसल्ली व दिलजूई) है । 15 : या'नी मुशिरकीने मक्का 16 : या'नी सय्यिदे अम्बिया

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ या कुरआन पर 17 : कि वोह अम्बिया की तक़ीब कर के अज़ाबे इलाही से हलाक होते रहे हैं, येही हाल इन का है तो इन्हें

अज़ाबे इलाही से डरते रहना चाहिये । 18 : या'नी इन कुफ़्फ़ार का इनाद इस दरजे पर पहुंच गया है कि अगर इन के लिये आस्मान में दरवाजा

खोल दिया जाए और इन्हें उस में चढ़ना मुयस्सर हो और दिन में उस से गुज़रें और आंखों से देखें जब भी न मानें और येह कह दें कि हमारी

नज़र बन्दी की गई और हम पर जादू हुआ, तो जब खुद अपने मुआयने से उन्हें यक़ीन हासिल न हुआ तो मलाएका के आने और गवाही देने

से जिस को येह त़लब करते हैं उन्हें क्या फ़ाएदा होगा । 19 : जो कवाकिब सय्यारा के मनाज़िल हैं, वोह बारह हैं : 1हमल, 2सौर, 3जौज़ा,

4सरतान, 5असद, 6सुम्बुला, 7मीज़ान, 8अक़ब, 9कौस, 10जदय, 11दल्ब, 12हूत । 20 : सितारों से 21 : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا

ने फ़रमाया : शयातीन आस्मानों में दाख़िल होते थे और वहां की ख़बरें काहिनों के पास लाते थे जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुए तो

शयातीन तीन आस्मानों से रोक दिये गए । जब सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की विलादत हुई तो तमाम आस्मानों से मन्ज़ कर दिये

गए । 22 : शिहाब उस सितारे को कहते हैं जो शो'ले के मिस्ल रोशन होता है और फ़िरिश्ते उस से शयातीन को मारते हैं । 23 : पहाड़ों के

ताकि साबित व काइम रहे और जुम्बिश न करे ।

مَوْرُونَ ١٩) وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرِزْقَيْنَ ٢٠) وَ

से उगाई और तुम्हारे लिये इस में रोजियां कर दीं²⁴ और वोह कर दिये जिन्हें तुम रिज़क नहीं देते²⁵ और

إِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنزِلُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ٢١)

कोई चीज़ नहीं जिस के हमारे पास खज़ाने न हों²⁶ और हम उसे नहीं उतारते मगर एक मा'लूम अन्दाज़े से

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاسْقَيْنَاكُمُوهُ ٢٢)

और हम ने हवाएं भेजीं बादलों को बार वर करने वालियां²⁷ तो हम ने आस्मान से पानी उतारा फिर वोह तुम्हें पीने को दिया

وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ٢٣) وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ

और तुम कुछ उस के खज़ान्ची नहीं²⁸ और बेशक हम ही जिलाएं और हम ही मारें और हम

الْوَارِثُونَ ٢٣) وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

ही वारिस हैं²⁹ और बेशक हमें मा'लूम हैं जो तुम में आगे बढ़े और बेशक हमें मा'लूम हैं

الْمُسْتَأْخِرِينَ ٢٤) وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ٢٥) إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ٢٥)

जो तुम में पीछे रहे³⁰ और बेशक तुम्हारा रब ही उन्हें क़ियामत में उठाएगा³¹ बेशक वोही इल्म व हिक्मत वाला है

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْتُورٍ ٢٦) وَالْجَانَّ

और बेशक हम ने आदमी को³² बजती हुई मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह बूदार गारा थी³³ और जिन्न को

24 : गुल्ले फल वगैरा । 25 : बांदी गुलाम चौपाए और खुद्दा वगैरा । 26 : खज़ाने होना इबारत है इक़तदार व इख़्तियार से मा'ना येह हैं कि हम हर चीज़ के पैदा करने पर कादिर हैं जितनी चाहें और जो अन्दाज़ा मुक़्तज़ाए हिक्मत हो । 27 : जो आबादियों को पानी से भरती और सैराब करती हैं । 28 : कि पानी तुम्हारे इख़्तियार में हो बा वुजूदे कि तुम्हें इस की हाज़त है । इस में **اَللّٰهُ** तआला की कुदरत और बन्दों के इज्ज पर दलालते अज़ीमा है । 29 : या'नी तमाम ख़ल्क फ़ना होने वाली है और हम ही बाक़ी रहने वाले हैं और मुद्इये मुल्क की मिलक जाएअ हो जाएगी और सब मालिकों का मालिक बाक़ी रहेगा । 30 : या'नी पहली उम्मतें और उम्मते मुहम्मदियह जो सब उम्मतों में पिछली है या वोह जो ताअत व ख़ैर में सबूत करने वाले हैं और जो सुस्ती से पीछे रह जाने वाले हैं या वोह जो फ़ज़ीलत हासिल करने के लिये आगे बढ़ने वाले हैं और जो उज़्र से पीछे रह जाने वाले हैं । शाने नुज़ूल : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से मरवी है कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने जमाअते नमाज़ की सफ़े अब्वल के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए तो सहाबा सफ़े अब्वल हासिल करने में निहायत कोशां हुए और उन का इज़्दिहाम होने लगा और जिन हज़रत के मकान मस्जिद शरीफ़ से दूर थे वोह अपने मकान बेच कर क़रीब मकान ख़रीदने पर आमामादा हो गए ताकि सफ़े अब्वल में जगह मिलने से कभी महरूम न हों, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तसल्ली दी गई कि सवाब निय्यतों पर है और **اَللّٰهُ** तआला अगलों को भी जानता है और जो उज़्र से पीछे रह गए हैं उन को भी जानता है और उन की निय्यतों से भी ख़बरदार है और उस पर कुछ मख़फ़ी नहीं । 31 : जिस हाल पर वोह मरे होंगे । 32 : या'नी हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** को सूखी 33 : **اَللّٰهُ** तआला ने जब हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** के पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो ज़मीन से एक मुश्त ख़ाक ली उस को पानी में ख़मीर किया जब वोह गारा सियाह हो गया और उस में बू पैदा हुई तो उस में सूरते इन्सानि बनाई, फिर वोह सूख कर खुश्क हो गया तो जब हवा उस में जाती तो वोह बजता और उस में आवाज़ पैदा होती जब आपताब की तमाज़त (गरमी) से वोह पुख़्ता हो गया तो उस में रूह फ़ूंकी और वोह इन्सान हो गया ।

خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السَّمُومِ ٢٤ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي

इस से पहले बनाया बे धूँ की आग से³⁴ और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिशते से फ़रमाया कि मैं

خَالِقُ بَشَرٍ مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَبَآئِمَسُّونٍ ٢٥ فَإِذَا سَوَّيْتَهُ وَنَفَخْتُ

आदमी को बनाने वाला हूँ बजती मिट्टी से जो बदबूदार सियाह गारे से है तो जब मैं उसे ठीक कर लूँ और उस में

فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سُجِدِينَ ٢٦ فَسَجَدَ الْمَلِكَةُ كُلُّهُمْ

अपनी तरफ़ की खास मुअज़्ज़ज रूह फूंक लूँ³⁵ तो उस³⁶ के लिये सज्दे में गिर पड़ना तो जितने फ़िरिशते थे सब के सब

أَجْعُونَ ٢٧ إِلَّا إِبْلِيسَ ٢٨ أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ٢٩ قَالَ

सज्दे में गिरे सिवा इब्लीस के उस ने सज्दे वालों का साथ न माना³⁷ फ़रमाया

يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ٣٠ قَالَ لَمْ أَكُنْ لِسَجْدِ

ऐ इब्लीस तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों से अलग रहा बोला मुझे ज़ैबा नहीं कि बशर को

لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَبَآئِمَسُّونٍ ٣١ قَالَ فَأَخْرِجْ مِنْهَا

सज्दा करूँ जिसे तू ने बजती मिट्टी से बनाया जो सियाह बूदार गारे से थी फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा

فَأِنَّكَ رَاجِمٌ ٣٢ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ٣٣ قَالَ رَبِّ

कि तू मरदूद है और बेशक क़ियामत तक तुझ पर ला'नत है³⁸ बोला ऐ मेरे रब

فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ٣٤ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ٣٥ إِلَى

तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वोह उठाए जाएँ³⁹ फ़रमाया तू उन में है जिन को उस मा'लूम

يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ٣٦ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي

वक्त के दिन तक मोहलत है⁴⁰ बोला ऐ रब मेरे क़सम इस की कि तू ने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन

34 : जो अपनी ह्रारत व लताफ़त से मसामों में नुफूज़ (सरायत) कर जाती है। 35 : और उस को ह्यात अता फ़रमा दूँ 36 : की तहिय्यत व ता'ज़ीम 37 : और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सज्दा न किया तो **اللّعنة** तअ़ाला ने 38 : कि आस्मान व ज़मीन वाले तुझ पर ला'नत करेंगे और जब क़ियामत का दिन आएगा तो इस ला'नत के साथ हमेशगी के अज़ाब में गिरिफ़्तार किया जाएगा जिस से कभी रिहाई न होगी, येह सुन कर शैतान 39 : या'नी क़ियामत के दिन तक। इस से शैतान का मतलब येह था कि वोह कभी न मरे क्यूं कि क़ियामत के बा'द कोई न मरेगा और क़ियामत तक की इस ने मोहलत मांग ही ली लेकिन इस की इस दुआ को **اللّعنة** तअ़ाला ने इस तरह क़बूल किया कि 40 : जिस में तमाम ख़ल्क मर जाएगी और वोह नफ़ख़ए ऊला (पहली मरतबा फूंका जाने वाला सूर) है तो शैतान के मुर्दा रहने की मुदत नफ़ख़ए ऊला से नफ़ख़ए सानिया (दूसरे सूर फूंकने) तक चालीस बरस है और इस को इस क़दर मोहलत देना इस के इक्राम के लिये नहीं बल्कि इस की बला व शकावत और अज़ाब की ज़ियादती के लिये है, येह सुन कर शैतान।

الْأَرْضِ وَلَا أُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

में भुलावे दूंगा⁴¹ और ज़रूर मैं उन सब को⁴² बे राह कर दूंगा मगर जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं⁴³

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ

फरमाया यह रास्ता सीधा मेरी तरफ आता है बेशक मेरे⁴⁴ बन्दों पर तेरा कुछ

سُلْطَنٌ إِلَّا مَنْ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَوِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ

काबू नहीं सिवा उन गुमराहों के जो तेरा साथ दें⁴⁵ और बेशक जहन्नम उन सब का

أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

वा'दा है⁴⁶ इस के सात दरवाजे हैं⁴⁷ हर दरवाजे के लिये उन में से एक हिस्सा बटा हुआ है⁴⁸

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ أَمِينٍ ﴿٤٦﴾ وَ

बेशक डर वाले बागों और चशमों में हैं⁴⁹ उन में दाखिल हो सलामती के साथ अमान में⁵⁰ और

نَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا

हम ने उन के सीनों में जो कुछ⁵¹ कीने थे सब खींच लिये⁵² आपस में भाई हैं⁵³ तख्तों पर रू बरू बैठे न

يَسْسُهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِخُرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِيُّ عِبَادِي أَنِّي أَنَا

उन्हें उस में कुछ तक्लीफ पहुंचे न वोह उस में से निकाले जाएं खबर दो⁵⁴ मेरे बन्दों को कि बेशक

الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْإِلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئُهُمْ عَنِ

मैं ही हूँ बख़्शने वाला मेहरबान और मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है और उन्हें अहवाल सुनाओ

41 : या'नी दुन्या में गुनाहों की रग़बत दिलाऊंगा 42 : दिलों में वस्वसा डाल कर 43 : जिन्हें तू ने अपनी तौहीद व इबादत के लिये बरगुज़ीदा फ़रमा लिया उन पर शैतान का वस्वसा और उस का कैद (धोका) न चलेगा । 44 : ईमानदार 45 : या'नी जो काफ़िर कि तेरे मुतीओ फ़रमां बरदार हो जाएं और तेरे इत्तिबाअ का कस्द कर लें । 46 : इब्लीस का भी और उस के इत्तिबाअ करने वालों का भी । 47 : या'नी सात तबके । इब्ने जुरैज का कौल है कि दोजख के सात दरकात (तबकात) हैं : अव्वल ¹जहन्नम, ²लज़ा, ³हुतमह, ⁴सईर, ⁵सकर, ⁶जहीम, ⁷हावियह । 48 : या'नी शैतान की पैरवी करने वाले भी सात हिस्सों में मुन्कसिम हैं इन में से हर एक के लिये जहन्नम का एक दरका (तबका) मुअय्यन है । 49 : उन से कहा जाएगा कि 50 : या'नी जन्नत में दाखिल हो अम्नो सलामती के साथ न यहां से निकाले जाओ न मौत आए न कोई आफ़त रूनुमा हो न कोई खौफ़ न परेशानी । 51 : दुन्या में 52 : और उन के नुफूस को हिकदो हसद व इनादो अ़दावत वगैरा मज़मूम ख़स्तलों से पाक कर दिया वोह 53 : एक दूसरे के साथ महबबत करने वाले हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि मैं और उस्मान और तल्हा और जुबैर इन ही में से हैं या'नी हमारे सीनों से इनादो अ़दावत और बुज़ो हसद निकाल दिया गया है, हम आपस में ख़ालिस महबबत रखने वाले हैं । इस में रवाफ़िज़ का रद है । 54 : ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ।

صَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ٥١) إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ

इब्राहीम के मेहमानों का⁵⁵ जब वोह उस के पास आए तो बोले सलाम⁵⁶ कहा हमें तुम से

وَجَلُونَ ٥٢) قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ٥٣) قَالَ

डर मा'लूम होता है⁵⁷ उन्होंने ने कहा डरिये नहीं हम आप को एक इल्म वाले लड़के की बिशारत देते हैं⁵⁸ कहा

أَبَشَّرْتُنِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فِيمَا تُبَشِّرُونَ ٥٣) قَالُوا ابْشِرْنَا

क्या इस पर मुझे बिशारत देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुंच गया अब काहे पर बिशारत देते हो⁵⁹ कहा हम ने आप को सच्ची

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَابِطِينَ ٥٥) قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ

बिशारत दी है⁶⁰ आप ना उम्मीद न हों कहा अपने रब की रहमत से कौन ना उम्मीद हो

إِلَّا الضَّالُّونَ ٥٦) قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ٥٤) قَالُوا إِنَّا

मगर वोही जो गुमराह हुए⁶¹ कहा फिर तुम्हारा क्या काम है ऐ फ़िरिश्ते⁶² बोले हम

أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ٥٨) إِلَّا آلَ لُوطٍ ۗ إِنَّا لَنَجُوهُمْ

एक मुजरिम कौम की तरफ़ भेजे गए हैं⁶³ मगर लूत के घर वाले उन सब को हम

أَجْعِلِينَ ٥٩) إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا ۗ إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ ٦٠) فَلَمَّا جَاءَ

बचा लेंगे⁶⁴ मगर उस की औरत हम ठहरा चुके हैं कि वोह पीछे रह जाने वालों में है⁶⁵ तो जब

آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ٦١) قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّكَرُّونَ ٦٢) قَالُوا بَلْ

लूत के घर फ़िरिश्ते आए⁶⁶ कहा तुम तो कुछ बेगाना लोग हो⁶⁷ कहा बल्कि

55 : जिन्हें **اَللّٰهُ** तआला ने इस लिये भेजा था कि हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** को फ़रज़न्द की बिशारत दें और हज़रते लूत **عَلَيْهِ السَّلَام** की कौम को हलाक करें। येह मेहमान हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** थे मअ कई फ़िरिश्तों के। 56 : या'नी फ़िरिश्तों ने हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** को सलाम किया और आप की तहिय्यतो तक्रीम बजा लाए तो हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने उन से 57 : इस लिये कि बे इज़्म और बे वक़्त आए और खाना नहीं खाया। 58 : या'नी हज़रते इस्हाक **عَلَيْهِ السَّلَام** की, इस पर हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने 59 : या'नी ऐसी पीराना साली (बुढ़ापे) में औलाद होना अजीबो ग़रीब है किस तरह औलाद होगी, क्या हमें फिर जवान किया जाएगा या इसी हालत में बेटा अता फ़रमाया जाएगा ? फ़िरिश्तों ने 60 : क़ज़ाए इलाही इस पर जारी हो चुकी कि आप के बेटा हो और उस की ज़ुरिय्यत बहुत फैले 61 : या'नी मैं उस की रहमत से ना उम्मीद नहीं क्यूं कि रहमत से ना उम्मीद काफ़िर होते हैं, हां उस की सुन्नत जो आलम में जारी है उस से येह बात अजीब मा'लूम हुई और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़िरिश्तों से 62 : या'नी इस बिशारत के सिवा और क्या काम है जिस के लिये तुम भेजे गए हो। 63 : या'नी कौम लूत की तरफ़ कि हम उन्हें हलाक करें 64 : क्यूं कि वोह इमानदार हैं 65 : अपने कुफ़्र के सबब। 66 : ख़ूब सूत नौ जवानों की शक्ल में और हज़रते लूत **عَلَيْهِ السَّلَام** को अन्देशा हुवा कि कौम इन के दरपै होगी तो आप ने फ़िरिश्तों से 67 : न तो यहां के बाशिन्दे हो न कोई मुसाफ़रत की अ़लामत तुम में पाई जाती है क्यूं आए हो ? फ़िरिश्तों ने।

جُنُكُ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَبْتَرُونَ ﴿٦٣﴾ وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا

हम तो आप के पास वोह⁶⁸ लाए हैं जिस में येह लोग शक करते थे⁶⁹ और हम आप के पास सच्चा हुक्म लाए हैं और हम

لَصَدِقُونَ ﴿٦٣﴾ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا

बेशक सच्चे हैं तो अपने घर वालों को कुछ रात रहे ले कर बाहर जाइये और आप उन के पीछे चलिये और

يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُوْمَرُونَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ

तुम में कोई पीछे फिर कर न देखे⁷⁰ और जहां को हुक्म है सीधे चले जाइये⁷¹ और हम ने उसे उस

الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَهُمْ لَآءٍ مَّقْطُوعٌ مُّصْحِحِينَ ﴿٦٦﴾ وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ

हुक्म का फैसला सुना दिया कि सुब्ह होते इन काफ़िरों की जड़ कट जाएगी⁷² और शहर वाले⁷³

يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٤﴾ قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ صِيفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللَّهَ

खुशियां मनाते आए लूत ने कहा येह मेरे मेहमान हैं⁷⁴ मुझे फ़ज़ीहत न करो⁷⁵ और **अल्लाह** से डरो

وَلَا تَحْزُونِ ﴿٦٩﴾ قَالُوا أَوْلَمْ نُنْهَكَ عَنِ الْعَلْبِيِّنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هَؤُلَاءِ

और मुझे रुस्वा न करो⁷⁶ बोले क्या हम ने तुम्हें मन्अ न किया था कि औरों के मुआमले में दख़ल न दो कहा येह कौम की औरतें

بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرِكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٢﴾

मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है⁷⁷ ऐ महबूब तुम्हारी जान की कसम⁷⁸ बेशक वोह अपने नशे में भटक रहे हैं

فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا

तो दिन निकलते उन्हें चिंघाड़ ने आ लिया⁷⁹ तो हम ने उस बस्ती का ऊपर का हिस्सा उस के नीचे का हिस्सा कर दिया⁸⁰

68 : अज़ाब जिस के नाज़िल होने का आप अपनी कौम को खौफ़ दिलाया करते थे 69 : और आप को झुटलाते थे । 70 : कि कौम पर क्या

बला नाज़िल हुई और वोह किस अज़ाब में मुब्तला किये गए । 71 : हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنهما** ने फ़रमाया कि हुक्म मुल्के शाम

عليه الصلوة والسلام لوت عليه الصلوة والسلام के यहां ख़ूब सूरत नौ जवानों के आने की ख़बर सुन कर ब इरादए फ़ासिद व ब निय्यते

की कौम के लोग हज़रते लूत عليه الصلوة والسلام के यहां ख़ूब सूरत नौ जवानों के आने की ख़बर सुन कर ब इरादए फ़ासिद व ब निय्यते

नापाक 74 : और मेहमान का इक्राम लाज़िम होता है, तुम इन की बे हुरमती का कस्द कर के 75 : कि मेहमान की रुस्वाई मेज़बान के लिये

ख़जालत व शरमिन्दगी का सबब होती है । 76 : इन के साथ बुरा इरादा कर के, इस पर कौम के लोग हज़रते लूत عليه السلام से 77 : तो इन

से निकाह करो और हुराम से बाज़ रहो । अब **अल्लाह** तआला अपने हबीबे अकरम **صل الله عليه وسلم** से खिताब फ़रमाता है 78 : और मख़्यूके

इलाही में से कोई जान बारगाहे इलाही में आप की जाने पाक की तरह इज़्ज़तो हुरमत नहीं रखती और **अल्लाह** तआला ने सय्यिदे अलाम

صل الله تعالى عليه وسلم की उम्र के सिवा किसी की उम्र व हयात की कसम नहीं फ़रमाई, येह मर्तबा सिर्फ़ हुजुर ही का है । अब इस कसम के बा'द

इर्शाद फ़रमाता है 79 : या'नी होलनाक आवाज़ ने । 80 : इस तरह कि हज़रते जिब्रील عليه السلام उस ख़ित्ते को उठा कर आस्मान के करीब

ले गए और वहां से औंधा कर के ज़मीन पर डाल दिया ।

عَلَيْهِمْ حَجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّينَ ﴿٤٥﴾

और उन पर कंकर के पथर बरसाए बेशक इस में निशानियां हैं फिरासत वालों के लिये

وَإِنهَا لِبَسِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٤٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَإِن كَانَ

और बेशक वोह बस्ती उस राह पर है जो अब तक चलती है⁸¹ बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों को और बेशक

أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لظَلِيمِينَ ۗ فَانْتَقَبْنَا مِنْهُمْ ۗ وَإِنهٗمَا لِبِأَمَامٍ

झाड़ी वाले ज़रूर ज़ालिम थे⁸² तो हम ने उन से बदला लिया⁸³ और बेशक येह दोनों बस्तियां⁸⁴

مُّبِينٍ ۖ وَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ۗ وَآتَيْنَهُمْ

खुले रास्ते पर पड़ती हैं⁸⁵ और बेशक हिज़्र वालों ने रसूलों को झुटलाया⁸⁶ और हम ने उन को

اٰیٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۗ وَكَانُوْا يُحِثُّوْنَ مِنَ الْجِبَالِ يَبُوْتًا

अपनी निशानियां दीं⁸⁷ तो वोह उन से मुंह फेरे रहे⁸⁸ और वोह पहाड़ों में घर तराशते थे

اٰمِنِيْنَ ۗ فَاخَذْتُهُمُ الصَّبِيْحَةَ مُصْبِحِيْنَ ۗ فَبَاۗءَ غٰنِيْ عَنۡهُمۡ مَا

बे खौफ़⁸⁹ तो उन्हें सुब्ह होते चिघाड़ ने आ लिया⁹⁰ तो उन की कमाई कुछ

كَانُوْا يُكْسِبُوْنَ ۗ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا اِلَّا

उन के काम न आई⁹¹ और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है

بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ فَاَصْفَحَ الصَّفْحَ الْجَبِيْلَ ۗ اِنَّ رَبَّكَ

अबस (बेकार) न बनाया और बेशक कियामत आने वाली है⁹² तो तुम अच्छी तरह दर गुज़र करो⁹³ बेशक तुम्हारा रब

81 : और काफिले उस पर गुज़रते हैं और गुज़बे इलाही के आसार उन के देखने में आते हैं। 82 : या'नी काफिर थे। "अयक़े" झाड़ी को कहते हैं, उन लोगों का शहर सर सब्ज जंगलों और मर्गजारों (सब्ज़ा ज़ारों) के दरमियान था **अब्लुह** तअलाला ने हज़रते शुऐब **عليه السلام** को उन पर रसूल बना कर भेजा, उन लोगों ने ना फ़रमानी की और हज़रते शुऐब **عليه السلام** को झुटलाया। 83 : या'नी अज़ाब भेज कर हलाक किया। 84 : या'नी कौमे लूत के शहर और अस्हाबे ऐका के 85 : जहां आदमी गुज़रते हैं और देखते हैं, तो ऐ अहले मक्का तुम इन को देख कर क्यूं इब्रत हासिल नहीं करते। 86 : "हिज़्र" एक वादी है मदीने और शाम के दरमियान जिस में कौमे समूद रहते थे, उन्होंने ने अपने पैगम्बर हज़रते सालेह **عليه السلام** की तक्ज़ीब की और एक नबी की तक्ज़ीब तमाम अम्बिया की तक्ज़ीब है क्यूं कि हर रसूल तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दा'वत देता है। 87 : कि पथर से नाका (ऊंटनी को) पैदा किया जो बहुत से अज़ाब पर मुश्तमिल था, मसलन उस का अज़ीमुल जुस्सा (कदो कामत का बड़ा) होना और पैदा होते ही बच्चा जनना और कसरत से दूध देना कि तमाम कौमे समूद को काफ़ी हो वगैरा, येह सब हज़रते सालेह **عليه السلام** के मो'जिज़ात और कौमे समूद के लिये हमारी निशानियां थीं 88 : और ईमान न लाए। 89 : कि उन्हें उस के गिरने और उस में नक्ब लगाए जाने का अन्देशा न था और वोह समझते थे कि येह घर तबाह नहीं हो सकते इन पर कोई आफ़त नहीं आ सकती। 90 : और वोह अज़ाब में गिरिफ़्तार हुए। 91 : और उन के मालो मताअ और उन के मजबूत मकान उन्हें अज़ाब से न बचा सके। 92 : और हर एक को उस के अमल की जज़ा मिलेगी। 93 : ऐ मुस्तफ़ा ! **صَلِّ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** और अपनी कौम की ईजाओं पर तहम्मूल करो। येह हुक्म आयते किताल से मसूख हो गया।

هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَكَ سَبْعًا مِنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ

ही बहुत पैदा करने वाला जानने वाला है⁹⁴ और बेशक हम ने तुम को सात आयतों दीं जो दोहराई जाती हैं⁹⁵ और अज़म

الْعَظِيمِ ﴿٨٧﴾ لَا تَسُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا

वाला कुरआन अपनी आंख उठा कर उस चीज़ को न देखो जो हम ने उन के कुछ जोड़ों को बरतने को दी⁹⁶ और

تَحْزَنُ عَلَيْهِمْ وَاخْفُضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ إِنِّي أَنَا

उन का कुछ ग़म न खाओ⁹⁷ और मुसलमानों को अपने रहमत के परों में ले लो⁹⁸ और फ़रमाओ कि मैं ही हूँ

التَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾ كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ الْمُقْتَسِبِينَ ﴿٩٠﴾ الَّذِينَ جَعَلُوا

साफ़ डर सुनाने वाला (उस अज़ाब से) जैसा हम ने बांटने वालों पर उतारा जिन्होंने ने कलामे इलाही को

الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوا

तिक्के बोटी कर लिया⁹⁹ तो तुम्हारे रब की क़सम हम ज़रूर उन सब से पूछेंगे¹⁰⁰ जो कुछ वोह

يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾ إِنَّا

करते थे¹⁰¹ तो अलानिया कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है¹⁰² और मुशिरकों से मुंह फेर लो¹⁰³ बेशक

94 : उसी ने सब को पैदा किया और वोह अपनी मख़्तूक के तमाम हाल जानता है । 95 : नमाज़ की रकअतों में या'नी हर रकअत में पढ़ी जाती हैं और इन सात आयतों से सूरेते फ़ातिहा मुराद है जैसा कि बुखारी व मुस्लिम की हदीसों में वारिद हुवा । 96 : मा'ना येह हैं कि ऐ सय्यिदे अम्बिया ! صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! हम ने आप को ऐसी ने'मतें अता फ़रमाई जिन के सामने दुन्यवी ने'मतें हकीर हैं तो आप मताए दुन्या से मुस्तग्नी रहें जो यहूदो नसारा वगैरा मुख़लिफ़ किस्म के काफ़िरों को दी गई । हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि हम में से नहीं जो कुरआन की बदौलत हर चीज़ से मुस्तग्नी न हो गया या'नी कुरआन ऐसी ने'मत है जिस के सामने दुन्यवी ने'मतें हेच हैं ।

97 : कि वोह ईमान न लाए 98 : और उन्हें अपने करम से नवाज़ो 99 : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَىٰ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि बांटने वालों से यहूदो नसारा मुराद हैं, चूँकि वोह कुरआने करीम के कुछ हिस्से पर ईमान लाए जो उन के ख़याल में उन की किताबों के मुवाफ़िक़ था और कुछ के मुन्किर हो गए । क़तादा व इब्ने साइब का कौल है कि बांटने वालों से कुफ़ारे कुरैश मुराद हैं जिन में बा'ज कुरआन को सेह्र बा'ज कहानत बा'ज अफ़साना कहते थे । इस तरह उन्होंने ने कुरआने करीम के हक़ में अपने अक्वाल तक्सीम कर रखे थे और एक कौल येह है कि बांटने वालों से वोह बारह अशख़ास मुराद हैं जिन्हें कुफ़ार ने मक्कए मुकर्रमा के रास्तों पर मुकर्रर किया था, हज़ के ज़माने में हर हर रास्ते पर उन में का एक एक शख़्स बैठ जाता था और वोह आने वालों को बहकाने और सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से मुन्हरिफ़ करने के लिये एक एक बात मुकर्रर कर लेता था कि कोई आने वालों से येह कहता था कि उन की बातों में न आना कि वोह जादूगर हैं, कोई कहता वोह कज़ाब हैं, कोई कहता वोह मजून हैं, कोई कहता वोह काहिन हैं, कोई कहता वोह शाइर हैं, येह सुन कर लोग जब ख़ानए का'बा के दरवाज़े पर आते वहां वलीद बिन मुग़ीरा बैठा रहता, उस से नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का हाल दरयाफ़्त करते और कहते कि हम ने मक्कए मुकर्रमा आते हुए शहर के कनारे उन की निस्वत ऐसा सुना वोह कह देता कि ठीक सुना, इस तरह ख़ल्क को बहकाते और गुमराह करते, उन लोगों को **الغول** तआला ने हलाक किया । 100 : रोज़े क़ियामत 101 : और जो कुछ वोह सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ और कुरआन की निस्वत कहते थे । 102 : इस आयत में सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को रिसालत की तब्लीग़ और इस्लाम की दा'वत के इज़हार का हुक्म दिया गया, अब्दुल्लाह बिन उबैदा का कौल है कि इस आयत के नुज़ूल के वक्त तक दा'वते इस्लाम ए'लान के साथ नहीं की जाती थी । 103 : या'नी अपना दीन ज़ाहिर करने पर मुशिरकों की मलामत करने की परवाह न करो और उन की तरफ़ मुल्तफ़ित (मुतवज्जेह) न हो और उन के तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा का ग़म न करो ।

كَفَيْتِكَ السُّتْرَيْنِ ٩٥ الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ

उन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफायत करते हैं¹⁰⁴ जो **अल्लाह** के साथ दूसरा मा'बूद ठहराते हैं तो अब

يَعْلَمُونَ ٩٦ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرَكَ بِمَا يَقُولُونَ ٩٤

जान जाएंगे¹⁰⁵ और बेशक हमें मा'लूम है कि उन की बातों से तुम दिलतंग होते हो¹⁰⁶

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ٩٨ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ

तो अपने रब को सराहते हुए उस की पाकी बोलो और सज्दा वालों में हो¹⁰⁷ और मरते दम तक अपने रब की

يَأْتِيكَ الْيَقِينُ ٩٩

इबादत में रहो

﴿اِيَاتَهَا ١٢٨﴾ ﴿سُورَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ ٤٠﴾ ﴿رُكُوعَاتُهَا ١٦﴾

सूरए नहूल मक्किय्या है इस में एक सो अठ्ठाईस आयतें और सोलह रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला¹

104 : कुफ़ारे कुरैश के पांच सरदार ¹आस बिन वाइल सहमी और ²अस्वद बिन मुत्तलिब और ³अस्वद बिन अब्दे यगूस और ⁴हारिस बिन कैस और इन सब का अप्सर ⁵वलीद इब्ने मुगीरा मखज़ूमि, येह लोग नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को बहुत ईजा देते और आप के साथ तमस्खुर व इस्तिहज़ा करते थे। अस्वद बिन मुत्तलिब के लिये सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने दुआ की थी कि या रब ! इस को अन्धा कर दे। एक रोज़ सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** मस्जिदे ह्राम में तशरीफ़ फरमा थे येह पांचों आए और इन्हों ने हस्बे दस्तूर ता'नो तमस्खुर के कलिमात कहे और त्वाफ़ में मशगूल हो गए। इसी हाल में हज़रते जिब्रीले अमीन हज़रत की खिदमत में पहुंचे और उन्हों ने वलीद बिन मुगीरा की पिंडली की तरफ़ और आस के कफ़े पा (पाउं के तल्लों) की तरफ़ और अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों की तरफ़ और अस्वद बिन अब्दे यगूस के पेट की तरफ़ और हारिस बिन कैस के सर की तरफ़ इशारा किया और कहा मैं इन का शर दफ़अ करूंगा। चुनान्चे थोड़े अर्से में येह हलाक हो गए, वलीद बिन मुगीरा तीर फ़रोश की दुकान के पास से गुज़रा उस के तहबन्द में एक पैकान चुभा (या'नी नेजे की नोक चुभी) मगर उस ने तकब्बुर से उस को निकालने के लिये सर नीचा न किया, उस से उस की पिंडली में ज़ख़म आया और उसी में मर गया, आस इब्ने वाइल के पाउं में कांटा लगा और नज़र न आया, इस से पाउं वरम कर गया और येह शख़्स भी मर गया, अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों में ऐसा दर्द हुवा कि दीवार में सर मारता था, इसी में मर गया और येह कहता मरा कि मुज़्ज को मुहम्मद ने क़त्ल किया (**صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) और अस्वद बिन अब्दे यगूस को इस्तिस्का हुवा (या'नी प्यास लगने की बीमारी हो गई) और कल्बी की रिवायत में है कि इस को लू लगी और इस का मुंह इस क़दर काला हो गया कि घर वालों ने न पहचाना और निकाल दिया, इसी हाल में येह कहता मर गया कि मुज़्ज को मुहम्मद (**صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) के रब ने क़त्ल किया और हारिस बिन कैस की नाक से खून और पीप जारी हुवा इसी में हलाक हो गया, इन्हों के हक् में येह आयत नाज़िल हुई। (طارن) **105** : अपना अन्जामे कार **106** : और उन के ता'न और इस्तिहज़ा और शिकों कुफ़ की बातों से आप को मलाल होता है **107** : कि खुदा परस्तों के लिये तस्बीह व इबादत में मशगूल होना ग़म का बेहतरीन इलाज है। हदीस शरीफ़ में है कि जब सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को कोई अहम वाक़िआ पेश आता तो नमाज़ में मशगूल हो जाते। **1** : सूरए नहूल मक्किय्या है मगर आयत "فَعَاذُوا بِمِثْلِ مَا عُوذْتُمْ بِهِ" से आखिर सूत तक जो आयत हैं वोह मदीनए तय्यिबा में नाज़िल हुई और इस में और अक्वाल भी हैं, इस सूत में सोलह रुकूअ और एक सो अठ्ठाईस आयतें और दो हज़ार आठ सो चालीस कलिमे और सात हज़ार सात सो सात हर्फ़ हैं।